प्रातःक्लास 29/5/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। अभी बच्चे भी हैं, बाबा भी है। बाबा अनेक बच्चों को कहेंगे ओ बेटे। सभी बच्चे फिर कहेंगे ओ बाबा। बच्चे हैं बहुत। तुम समझते हो यह ज्ञान हम आत्माओं के लिए ही है। एक बाप के कितने ढेर बच्चे हैं। बच्चे जानते हैं बाप पढ़ाने आये हैं। वह पहले–2 बाबा है, फिर टीचर है, फिर गुरू है। अब बाप तो बाप ही है। सारा दिन साथ रहते ही हैं। फिर समय पर आकर पुण्यात्मा, पवित्र बनने लिए याद की यात्रा सिखलाते हैं। बाप आकर पढ़ाते हैं और यह सभी बच्चे समझते हैं यह पढ़ाई वण्डरफुल है। बाप बिगर कोई समझा न सके। ड्रामा के आदि, मध्य, अंत का राज़, 84 जन्मों के चक्र का राज़, सिवाय बाप के कोई बता न सके; इसलिए इनको बेहद का बाप कहा जाता है। यह निश्चय तो बच्चों को ज़रूर बैठा है। इसमें संशय की बात नहीं उठ सकती। इतनी बेहद की पढ़ाई बेहद के बाप के सिवाय तो कोई पढ़ा न सके। बुलाते भी हैं– बाबा आओ, हमको पावन दुनियां में ले चलो; क्योंकि यह है पतित दुनियां। बाप ही पावन दुनियां में ले जाते हैं। वहां थोड़े ही कहेंगे– बाबा आओ, पावन दुनियां में ले जाओ। बच्चे जानते हैं हम आत्माओं क(ा) वह बाप है। तो देह का भान टूट जाता है। आत्मा कहती है वह हमारा बाप है। अभी यह तो निश्चय रहना चाहिए बरोबर बाप बिगर इतनी नॉलेज कौन दे सके। पहले तो यह निश्चय बुद्धि चाहिए। निश्चय भी आत्मा की बुद्धि को होता है। आत्मा को ज्ञान मिलता है हमारे यह बाबा हैं। यह बहुत पक्का निश्चय बच्चों को होना चाहिए। मुख से कहना कुछ भी नहीं है। हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। आत्मा में ही सब संस्कार हैं। अभी तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। हमको ऐसा पढ़ाते हैं, कर्म सिखलाते हैं, जो हम इस दुनियां में आवेंगे ही नहीं। वह मनुष्य तो (समझते) हैं इस दुनियां में आना है। तुम ऐसे नहीं समझते हो। तुम यह अमर कथा सुन रहे हो। अमर कथ(ा का भी अ)र्थ होना चाहिए ना। अमरपुरी .... सतयुग–त्रेता अमरपुरी। बच्चों को कितनी .....(होनी) चाहिए। यह पढ़ाई सिवाय बाप के कोई पढ़ा न सके। बाबा हमको पढ़ाते हैं। और जो भी ट(ीचर्स हैं) वह तो सभी ऑर्डिनरी मनुष्य हैं पढ़ाने वाले। यहाँ तुम जिसको पतित–पावन कहते हो, बाबा आकर दुःख हर, सुख दो। जो बाप तुमको सम्मुख अभी पढ़ा रहे हैं। सम्मुख होने बिगर राजयोग की पढ़ाई कैसे पढ़ावेंगे? बाप कहते हैं तुम स्वीट बच्चों को यहाँ पढ़ाने आता हूँ। पढ़ाने लिए इनमें प्रवेश करता हूँ। है भी बरोबर भगवानुवाच तो ज़रूर उनको शरीर चाहिए ना। न सिर्फ़ मुख; परन्तु सारा शरीर चाहिए। खुद कहते हैं– मीठे–2 रूहानी बच्चों, मैं कल्प–2 पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। इस साधारण तन में आता हूँ। बहुत ग़रीब भी नहीं तो बहुत साहू(कार) भी नहीं। साधारण है। यह तो बच्चों को निश्चय होना चाहिए वह हमारा बाबा है। हम आत्मा हैं। हम आत्माओं का बाबा है। सारी दुनियां जो भी मनुष्य मात्र की आत्माएँ हैं उन सभी का बाबा है; इसलिए उनको बेहद का बाबा कहा जाता है। शिवजयन्ति मनाते हैं उसका भी किसको पता नहीं। कोई से भी पूछो शिवजयन्ति कब से मनाई जा रही है? कहेंगे, परम्परा से। वह भी कब? कोई डेट तो होनी चाहिए ना। ड्रामा तो अनादि है; परन्तु एक्टिविटी जो ड्रामा में होती है उनकी तिथि–तारीख तो चाहिए ना। यह तो कोई भी नहीं जानते। हमारा शिवबाबा आते हैं तो उस लव से जयन्ति नहीं मनाते हैं। नेहरू की जयन्ति उस लव से मनावेंगे। आँसू भी आ जावेंगे। शिवजयन्ति का किसको भी पता नहीं। अभी तुम बच्चे अनुभवी हो। अनेक मनुष्य हैं जिनको कुछ भी पता नहीं। कितने मेले आदि लगते हैं। वहाँ जो जाते हैं वह बता सकते हैं कि सच्च–2 क्या–2 है। जैसे बाबा ने अमरनाथ का भी मिसाल बताया था। वहाँ जाकर देखा सच्च–2 क्या होता है। दूसरे तो औरों द्वारा जो सुनते हैं वह बतलाते हैं। कोई ने कहा बर्फ़ का लिंग होता है, कहेंगे सत्य। अभी तुम बच्चों को अनुभ(व) मिला है राइट क्या है, रॉंग क्या है। भक्तिमार्ग में जो कुछ सुनते, पढ़ते आये वह सभी हैं अनराइटियस। गायन है झूठी माया... यह है ही झूठ खण्ड। वह है सच्च खण्ड सतयुग। यह कलियुग। नाम ही अलग है। उनको (भी)

तुम जानते हो। और कोई नहीं जानते। सतयुग, त्रेता, द्वापर पास्ट है। अभी कलियुग चल रहा है। यह भी बहुत थोड़े ही जानते हैं। तुम्हारी बुद्धि में सब ख़्यालात रहती है। बाप के पास सारी नॉलेज है। (उन)को कहते हैं ज्ञान का सागर। उनके पास जो नॉलेज है वह इस तन द्वारा दे हमको आप समान बना रहे हैं। जैसे टीचर भी आप समान बनाते हैं ना। तो बेहद का बाप भी कोशिश कर आप समान ही बनाते हैं। लौकिक बाप आप समान नहीं बनाते हैं। वह तो टीचर के हाथ वा गुरू के हाथ दे देंगे आप समान बनाने की। वह सभी हैं हद की बातें। तुम अभी आये हो बेहद के बाप पास। वह जानते हैं मुझे बच्चों को आप समान बनाना है। जैसे टीचर आप समान टीचर बनावेंगे। बैरिस्टर कहेंगे हम आप समान बैरिस्टर बनाते हैं। अंदर में जानते हैं सब तो आप समान नहीं बनेंगे। नम्बरवार ही होंगे। यह बाप भी ऐसे कहते हैं नम्बरवार बनेंगे। मैं जो पढ़ाता हूँ यह है अविनाशी पढ़ाई। जो जितना पढ़ेंगे वह व्यर्थ नहीं जावेगा। आगे चल कर खुद कहेंगे हम चार वर्ष आगे, आठ वर्ष आगे कोई से यह ज्ञान सुना था, अभी फिर आया हूँ। फिर कोई चटक पड़ते हैं। शमा तो है फिर उस पर तो कोई परवाने एकदम फिदा हो जाते हैं, कोई तो फरी पहन वले(चले) जाते हैं। शुरू में शमा पर बहुत परवाने आशुक हो पड़े ड्रामा प्लैन अनुसार। भट्ठी बननी थी। कल्प–2 ऐसे ही होता आया है। तो जो कुछ पास्ट हुआ कल्प पहले भी हुआ था। आगे भी फिर वही रिपीट होगा। बाकी यह पक्का निश्चय रखो हम आत्मा हैं। बाप हमको पढ़ाते हैं। इस निश्चय में पक्के रहो। भूल न जाओ। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो बाप को न समझे। भल फारकती दे देगा तो भी समझेंगे हम बाप को फारकती दे दी। यह तो बेहद का बाप है। उनको तो हम कभी भी नहीं छोड़ेंगे। अंत तक साथ रहेंगे। यह बाप तो सभी की सद्गति करने वाला है। .... समझते हैं (सतयुग) में बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। यह नॉलेज भी वही बाप सुनाते हैं। और कोई सुना न सके। किसकी बुद्धि में बैठ न सके। तुम आत्माओं का वह बाप है। सृष्टि के आदि, मध्य, अंत की भी उनको नॉलेज है। वह चैतन्य बीज रूप है। क्या नॉलेज देंगे? सृष्टि रूपी झाड़ की। रचयिता ज़रूर रचना के आदि, मध्य, अंत का नॉलेज देंगे। तुम थोड़े ही जानते थे। तुमको पता था क्या सतयुग कब था, फिर कहाँ गया? कोई को भी नॉलेज नहीं। अभी तुम सामने बैठे हो। बाबा बात कर रहे हैं। पक्का निश्चय करते हो हम सभी आत्माओं का बाप है। हमको पढ़ा रहे हैं। यह कोई जिस्मानी टीचर नहीं। इस शरीर में पढ़ाने वाला वह निराकार शिवबाबा विराजमान है। वह निराकार होते भी यहाँ ज्ञान का सागर है। मनुष्य तो कह देते उनका कोई आकर(आकार) नहीं। इतने पत्थर बुद्धि हो गये हैं। महिमा भी गाते हैं ज्ञान का सागर, सुख का सागर...; परन्तु समझते नहीं हैं। ड्रामा अनुसार बहुत दूर चले गये हैं। बाबा बहुत नज़दीक ले आते हैं। यह तो 5000 वर्ष की बात है। तुम समझते हो बाबा हर 5000 वर्ष बाद हमको पढ़ाने आते हैं। यह भी समझते हो पुरानी सो नई, नई सो पुरानी होती है। जो पवित्र थे वही 84 जन्म ले पतित बनते हैं। फिर वही पावन बनेंगे। यह सृष्टि का चक्र बाप ही समझाते हैं। यह नॉलेज और कोई से मिल न सके। यह नॉलेज है ही नई दुनियां के लिए। कोई मनुष्य तो दे न सके; क्योंकि सभी तमोप्रधान हैं। तमोप्रधान आत्मा किसको सतोप्रधान बना न सके। वह तो तमोप्रधान बनते जाते हैं। सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को कोई भी नहीं जानते। अभी तुम समझते हो हम फिर से जान रहे हैं। बाबा इनमें प्रवेश कर हमको बता रहे हैं और फिर बाप कहते हैं– बच्चे, गफलत न करना। दुश्मन अभी भी तुम्हारे पीछे है, जिसने ही तुमको गिराया है। वह अभी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी। तुम खबरदार न रहेंगे तो, याद न करेंगे तो फिर और ही विकर्म करा देगी। फिर कुछ न कुछ चमाट (लग) जावेगी। अभी देखो आसुरी मत अपन को ऐसी चमाट मारी है, क्या–2 कर दिया है। शिव–शंकर इकट्ठा कह देते। उनका ऑक्युपेशन क्या! उनका क्या! कितना फ़र्क है। शिव तो है ऊँच ते ऊँच भगवान। शंकर देवता। फिर शिव–शंकर

इकट्ठा कैसे कह देते? शंकर के लिए कहते हैं विनाश करता है। वह अलग। फिर दोनों को इकट्ठा क्यों कर दिया? पार्ट ही दोनों का अलग–2 हैं। यहाँ भी बहुतों के ऐसे नाम हैं। राधे–कृष्ण, लक्ष्मी–नारायण, शिव–शंकर। दोनों ही नाम सिर पर रख दिये हैं। तो बच्चे यह समझते हैं इस समय तक बाप ने जो समझाया है वह फिर भी रिपीट होगा। बाकी थोड़े रोज़ हैं। बाप बैठ थोड़े ही जावेगा। बच्चे नम्बरवार पढ़ कर जावेंगे और कर्मातीत पूरे बन जावेंगे। ड्रामा अनुसार माला भी बन जावेगी। कौन–सी माला? सभी आत्माओं की माला बन जावेगी। तब फिर सभी वापस आवेंगे। माला नम्बरवन तो तुम्हारी है। शिवबाबा की माला तो बड़ी लम्बी है। वहाँ से नम्बरवार आवेंगे पार्ट बजाने। सभी बाबा–बाबा कहते हो। सभी एक माला के दाने हो। सभी विष्णु की माला का दाना नहीं कहेंगे। यह बाप बैठ पढ़ाते हैं। सूर्यवंशी बनाना ही है। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी जो पास्ट हो गये हैं वह फिर बनेंगे। वह मर्तबा मिलता ही है पढ़ाई से। बाप की पढ़ाई बिगर यह मर्तबा मिल (न) सके। चित्र भी हैं; परन्तु कोई भी ऐसा एक्सपेक्ट नहीं करते हैं कि हम यह बन सकते हैं। कथाएँ भी सत्य ना० की सुनते हैं; परन्तु समझते नहीं कि हम नर से नारायण बनेंगे। सिर्फ़ ऐसे ही जाकर सुनते हैं; क्योंकि समझते हैं न सुनेंगे तो बेड़ा डूब जावेगा, यह होगा। भक्तिमार्ग है ना। बहुत ही डर की रोचक बातें मनुष्यों को सुनाते हैं। गरूड़ पुराण में सभी ऐसे ही बातें हैं। बाप कहते हैं यह विषय वैतरणी नदी रौरव नर्क है। खास भारत को कहेंगे। बृहस्पत की दशा भी बैठती है भारत पर। वृक्षपति भारतवासियों को ही बैठ पढ़ाते हैं। बेहद का बाप बैठ बेहद की बातें समझाते हैं। दशा बैठती है ना राहू; इसलिए फिर कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप भी कहते हैं इस कलियुग के अंत में राहू की दशा सभी पर हैं। अभी मैं वृक्षपति आया हूँ भारत पर वृक्षपत की (दशा) बैठाने। सतयुग में वृक्षपत की दशा भारत पर थी। अभी राहू की दशा है। यह बेहद की (बात है। यह) कोई शास्त्रों आदि में नहीं है। तुम मैगज़ीन आदि बैठ लिखते हो, वह भी जो कुछ न कुछ भट्ठी में पड़े हुये (हों)गे उनको मैगज़ीन मिलने से कुछ समझ में आवेगा। वह फिर जास्ती समझने लिए भागेंगे। बाकी तो (कुछ भी नहीं) समझेंगे। जो थोड़ा पढ़ कर फिर छोड़ देते हैं तो फिर थोड़ा भी ज्ञान घृत उनमें डालने से फिर सुजाग हो पड़ते हैं। ज्ञान को घृत भी कहा जाता है। बुझी हुई दीवे में बाप अभी ज्ञान घृत डाल रहे हैं। कहते हैं बच्चे, माया के तूफान तो बहुत ही आवेंगे। दीवे को बुझा देंगी। शमा पर परवाने कोई तो जल मरते हैं, कोई (फेरी) पहन कर चले जाते हैं। वही बात अभी प्रैक्टिकल में चल रही है। नम्बरवार सभी परवाने हैं। पहले–2 एकदम घर–बार छोड़कर आये। परवाने बने। जैसे लॉटरी मिल गई एकदम। कोई तो पेट में भी बच्चे ले आये। जो कुछ पास्ट हुआ फिर तुम ऐसे ही करेंगे। भल चले गये। ऐसे मत समझना स्वर्ग में नही आवेंगे। परवाने बने, आशुक हुये फिर माया ने हराया तो पद कम हो जावेगा। नम्बरवार तो होते ही हैं। और सतसंगों में कोई की बुद्धि में नहीं होगा। तुम्हारी बुद्धि में है हम बाप से नई दुनिया के लिए पुरुषार्थ अनुसार पढ़ रहे हैं। हम बेहद के बाप के सम्मुख बैठे हैं। यह भी जानते हो वह आत्मा देखने में नहीं आती। वह तो अव्यक्त चीज़ है। उनको दिव्य दृष्टि द्वारा ही देखा जा सकता है। हम आत्मा भी छोटी बिन्दी हैं; परन्तु देह अभिमान छोड़ अपन को आत्मा समझना यह है ऊँची ते ऊँची पढ़ाई। उस पढ़ाई में जो भी डिफीकल्ट सब्जेक्ट है उनमें अक्सर करके सभी फेल होते हैं। यह सबजेक्ट है भी बहुत सहज; परन्तु कइयों को डिफीकल्ट फ़ील होती है। सभी उनको शिवबाबा, शिवबाबा कहते हैं। अभी तुम समझते हो शिवबाबा सामने बैठा है। यह कोई उनका अपना शरीर नहीं है। उनको अपना शरीर ही नहीं। तुम भी आत्माएँ हो निराकार; परन्तु शरीर साथ हो। बाप अपना शरीर कब लेते नहीं। मनुष्य फिर कह देते नाम–रूप से न्यारा है। कुछ भी है नहीं; इसलिए ही डिफीकल्ट समझ लिया है। बाप समझाते हैं कृष्ण को याद करने से कुछ भी मिलेगा नहीं। भल नम्बरवन स्वर्ग़ का प्रिंस

है। उनको भी न जानने कारण उनको भी कहाँ–2 रुला दिया है। कृष्ण के लिए भी कब कहते यशोदा का बच्चा, कब कहते रुकमणी का, कब कहते देवकी का था। आखरीन भी किसका बच्चा है? कितने माँ–बाप दे दिये हैं। यह भी तो राँग है। बाप बैठ सभी बातें समझाते हैं। बाप कहते हैं तुम्हारी बुद्धि में भक्तिमार्ग का भूसा भरा हुआ है। अभी मैं तुमको ज्ञान देता हूँ। भक्ति से कोई नई दुनियां में नहीं जाते। ज्ञान से तुम नई दुनियां के मालिक बनते हो। ज्ञान सागर जब आवेंगे तब तो पावन बन सकेंगे। भक्तिमार्ग है ही पतित। तब ही बाप को बुलाते हैं– हे पतित–पावन... गांधी भी गाते थे। समझते थे गांधी राम राज्य स्थापन करते हैं। अभी भी समझते हैं वह राम राज्य बनाकर गये। हमारा राज्य हो गया। वह फिरंगी लोग रावण थे। वह चले गये। कई तो इसमें ही खुश है; परन्तु यह कोई राम राज्य है थोड़े ही। कहाँ है स्वर्ग? यह ल०ना० चैतन्य कहाँ हैं? तब ही कहें राम राज्य है। वह तो नई दुनियां होनी चाहिए। सभी कुछ सोने का होना चाहिए। यह तो और ही रावण राज्य तमोप्रधान हो गया है। फिर भी उन्हों के राज्य में इतने कंगाल नहीं थे। अनाज आदि बहुत ही था। अभी तो कंगाल हैं। सभी अक़्ल आदि वहाँ से सीखते हैं। बाप समझाते हैं जो सतोप्रधान थे वही अभी तमोप्रधान बने हैं। तुमने जितना सुख देखा है उतना और कोई ने नहीं देखा होगा। फिर तुम ही सबसे जास्ती दुःखी भी हुये हो। उन्हों की बुद्धि तो तीखी है। कितने साइंस आदि निकालते हैं। अभी यह भी कहते हैं हम भी बॉम्ब्स बना सकते हैं। उनसे भी अपन को तीखा समझते हैं। यह है सभी देह–अभिमान। बाप देही–अभिमानी बनाते हैं। वह भी अपनी बुद्धि से मूसल आदि निकालते हैं अपने कुल के विनाश के लिए। बॉम्ब्स से उस तरफ खलास होंगे। यह कोई उनका कुल थोड़े ही है। वह है यादव कुल। यहाँ तो यवनों और हिन्दुओं की सिविल वार है। खून की नदी बहेगी। उसमें हाय–हायकार होगा। बॉम्ब्स में हाहाकार की .... नहीं, बैठे–2 अचानक ही ख़त्म। मुख से हाय–2 निकलने का टाइम नहीं। गला ही घुट जावेगा। हाय–हायकार के बाद जय–जयकार होगा। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। अनेक बार यह चक्र फिरा। भक्तिमार्ग में है ही घोर–अंधियारा। अभी तक समझते रहते हैं 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। बाप कहते हैं यह ड्रामा ही 5000 वर्ष का है। अभी तुम समझावेंगे तब ही जगेंगे। वह भी जगेंगे वही जो कल्प पहले जगे थे। पढ़ाई में कब भी सभी एकरस पास नहीं हो सके। यह चक्र चलता ही रहता है। दिन–रात, संवत यह चलता ही रहता है। फिर भी पहला संवत होगा ना। अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। वह कलियुग में हैं। यह वण्डर है। यह सभी है एडॉप्टेशन रचना। पवित्र ज़रूर बनना है नम्बवार पुरुषार्थ अनुसार। पुरुषार्थ भी नम्बरवार कर रहे हैं। कल्प पहले वही राजाई बनेगी। यह बातें बेहद के बाप बिगर कोई सुना न सके। फिर क्या करेंगे? क्या उनको थैंक्स देंगे? नहीं। बाप कहते हैं यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। मैं कोई नई बात नहीं करता हूँ। थैंक्स तो भक्तिमार्ग में देते हैं। टीचर कहेंगे अच्छी रीत पढ़ते हैं तो हमारा नाम–बाला होगा। स्टूडेन्ट को थैंक्स दी जाती है। स्टूडेन्ट फिर बाप को थैंक्स देंगे। जो अच्छी पढ़ते–पढ़ाते हैं उनको थैंक्स देते हैं। बच्चे जीते रहो। ऐसे–2 सर्विस करते रहो। कल्प पहले भी ऐसे की थी। फिर भी कह देते खबरदार रहना।